CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2348-7143

Curren Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

Octomber 2020 Issue- XI Vol. III

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Shaurya Publication , Latur

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) Oct. 2020 | Peer Reviewed SJIF Impact factor | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1. Digital Banking :An Overview 5
Dr Madhukar P Aghav
2. Financial Markets : Evaluating Averages and Indicators 13
Dr Sachin Nagnath Hadoltikar
Memon Sohel Mohd Yusuf
3. Human Resource Management (Hrm) :An Overview 19
Dr. Kathar Ganesh. N.
4. Impact of Mergers & Acquisition on Private Sector Banks 26
In Global Economy
Dr. Nanaji Krishna Aher
5. Dramatic Stress: The Spirit of Play 32
Sheema Farheen
Dr Farhat Durrani
6. Recent Trend InBanking 41
Swapnil .Kalyan. Laghane, Dr Quazi Baseer Ahmed
7. Corporate Governance in Maharashtra Companies 49
Dr. Rajesh Bhausaheb Lahane
8. Effective Digital Marketing Strategies & Approaches 59
Dr Vikrant Uttamrao Panchal
9. Global Competitiveness of Indian Industries Strategy and 70
Innovation
Dr. Rajendra Ashokrao Udhan
10. Indian logistics Trade in Dynamic World Scenario 79
Adnan Ali Zaidi, Dr Memon Ubed
11. Demonetization: Before And After Menkudle D.V 95
Dr. Shahuraj S. Mule
12. लातूर जिल्ह्यातील मराठी महिन्यानुसार यात्रांचे वितरण : एक भौगोलिक अभ्यास 99
प्रा.डॉ.आर.एस. धनुश्वर
13. हिंदी साहित्य में किसान विमर्श 102
डॉ. सुभाष इंगळे
14. हस्त भरत कला – मार्गदर्शन आणि उपयोगिता हस्त–भरतकलेचा इतिहास : 105
डॉ. एम.एन साखळकर
15. अध्यापन पध्दती व व्यावसायिक विकास घडवून आणणाऱ्या सुधारणा 109
डॉ. सतीश नारायण लोमटे
16. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में युवा मानसिकता 112
प्रा. रामहरि काकडे

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Issue XI , Vol. III (Indexed) | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Oct. 2020 | SJIF Impact factor | Impact Factor : 7.139

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में युवा मानसिकता

प्रा. रामहरि काकडे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, महिला महाविद्यालय, गेवराई, जिला – बीड (431127)

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति की घटना भारतीय समाज जीवन के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण घटना है। सालो से चली आई अग्रेंजों की दासता से मूक्ति पाने से पूरे भारतवर्ष में हर्षोल्लास का वातावरण छा गया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं ने बढ–चढकर भाग लिया था। तो स्वाभाविक रुप से स्वतंत्रता प्राप्ति से भारतीय युवाओं में जो उत्साह निर्माण हुआ था वह सन 60 तक समाप्त होता दिखाई देता है। यह मोहभंग की स्थिति थी। क्योंकि आजादी के समय जो स्वप्न देखे थे वह बढी तिव्रता से समाप्त होते दिखाई दिय। बढती महँगाई, रिश्वतखोरी, भाई–भतीजावाद, बेरोजगारी आदि कारणों से भारतीय युवाओं के मानसिकता में काफी बदलाव आया। अन्य साहित्यिक विधाओं के समान नाट्यसाहित्य में भी इन बदलती युवाओं की मानसिकता का चित्रण हुआ है।

भारतवर्ष विविधताओं से युक्त है। यहाँ पर धार्मिक, भाषिक, जातिय, आर्थिक, वर्गीय शैक्षिक विभिन्नता बढी मात्रा में विद्यमान है। हिंदी नाटकों में इन सभी वर्गो के युवाओं की मानसिकता का चित्रण हुआ है। आधुनिक युग में शिक्षा को महत्व है। शिक्षा से ही मनुष्य संस्कारित होकर समाज का दायित्व निर्वाह कर सकता है। शिक्षा रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराती है। इसलिए आलोच्य काल के नाटको में युवाओं की मानसिकता पर शिक्षा का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में 'आधे–अधुरे', 'एक और द्रोणाचार्य', 'कोर्ट मार्शल','ख्याल भारमली','बंधन अपने–अपने', 'बिना दीवारों का घर','हवाओं का विद्रोह','सुनो शेफाली' आदि नाटकों में शिक्षित युवाओं की मानसिकता का चित्रण हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में मोहन राकेश की नाट्यकृति 'आधे–अधूरे' महत्वपूर्ण है। इसमें शिक्षित परिवार के सभी सदस्य अपने आप में अकेले है। सावित्री, महेंद्रनाथ पति–पत्नी है तो बडी लडकी और बडा लडका शिक्षित एवं बेरोजगार है। शिक्षित होकर भी संपूर्ण परिवार बिखरा हुआ दिखाई देता है। परिवार में आपसी प्रेम का अभाव है तथा हर कोई घर से बाहर रहना चाहता है। नाटककाव ने नाटक में वर्तमान से सीधा साक्षात्कार किया है। इसमें सामान्य जीवन की घटनाओं को आधार बनाकर वर्तमान समय की सच्ची तस्वीर बनाई है। महेंद्रनाथ के आर्थिक घाटे से संपूर्ण परिवार मध्यवर्ग में रुपांतरित हुआ है। जिससे यह परिवार विघटित हुआ है। बीन्नी एक लडके के साथ भाग जाती है तो अशोक नायिकाओं की तस्वीरों में दिलचस्पी रखता है। बीन्नी.स्त्री–पुरुष के काम जीवन में रुचि रखने लगती है। अशोक सावित्री के ऊँचे पुरुषों के साथ संबधों से नाराज है। वह स्वयं तो कुछ नहीं करता पर सावित्री पर पाबंदी लगाना चाहता है। वह शिक्षित बेरोजगार युवा है तथा आसानी से अच्छा काम मिलने की फिराक में है। दरअसल वह आज की बिगडी पीढी का प्रतिनिधि है। किन्नी माँ से सहानुभूति तो रखती है पर अवसर मिलते ही मनोज के साथ भाग जाती है। किंतु विवाह के बाद वह कहती है, " शादी से पहले मुझे लगता था कि, मनोज को अच्छी तरह जानती हूँ। पर अब आकर...अब आकर लगने लगा है वह जानना बिलकुल जानना नहीं था।" 1

इस नाटक के युवा पात्र विघटित मानसिकता के पात्र है।

स्वदेश दिपक के नाटक कोर्ट मार्शल में रामचन्दर के माध्यम से एक शिक्षित दलित युवा की मानसिकता का चित्रण किया है। रामचन्दर भारतीय फौज में देश सेवा में है। लेकिन निम्न वर्ग का होने के कारण उसके वरिष्ठ कैप्टन वर्मा और कैप्टन कपूर बार–बार उसे जलील करते थे। "अपनी ड्यूटी पर तैनात एक सैनिक पर आखिर वे कौन–से दबाव थे, जिनसे असह्य होने पर उसने एक अफसर की हत्या की और दूसरे को घायल किया, इस सवाल को हल करने के क्रम में लेखन ने गंभीर अपराधों के लिए नियत कोर्ट मार्शल जैसी सैन्य न्याय–व्यवस्था को तो उजागर किया ही है, भारतीय समाज का कोढ कहे जानेवाली जाति और वर्ण – व्यवस्था के अमानवीय चेहरे को भी नंगा किया है।" 2

प्रस्तुत नाटक में रामचन्दर के माध्यम से शिक्षित दलित युवा की मानसिकता को चित्रित किया है। पीढी–दर–पीढी चली आई अन्याय की परंपरा व्यक्ति को इतना क्रूर बनाती है कि, वह किसी की हत्या तक करता है। रामचन्दर विद्रोही युवा मानसिकता का दलित पात्र है।

"**बलवान सिंह :** गोली चलने की आवाज सुनकर बहुत सारे जवान बैरकों से दौडकर बाहर आए। हादसे की जगह पहूँच गए। सबसे सामने रामचन्दर चीख–चीखकर कह रहा था – मैनें चलाई है गोली। मुझे छोड दो, छोड दो। मै इस कैप्टन का भी कत्ल करूँगा। लेकिन तब तक हम उसके हाथ से राइफल छीन चुके थे। बडी मुश्किल से चार–पाच जवान रामचन्दर को जखड सके। भगवान ही जाने साहब, उस रात इतनी बला की ताकत रामचन्दर में कहा से आ गई थी।"3 उसे यह ताकत बरसों से चली आई गुलामी की अतिशयता से आई थी।

शंकर शेष का नाटक 'पोस्टर' के आदिवासी युवा पात्र कल्लू, चैती, कारिंदा विद्रोही युवा मानसिकता से युक्त पात्र है। वे गाव के पटेल के गोदाम में काम करते थे। कल्लू की शादी होने के बाद जब उसकी पत्नी चैती भी पटेल के गोदाम में मजदूरी करने जाने लगी तब वह अपने मैके से लाया कागज गोदाम में चिपका देती है जिसे देखकर पटेल घबरा जाता है। "मजदूर–1ः चैती, तेरे कागज में जरुर कोई जादू है। चैतीः हम का जानैं, वहां शहर में पडा रहा, सो उठा लाई। मजदूर 2 : इसमें जरुर कोई बात है। मजदूर 3 : इसमें जरुर कोई डरावनी बात लिखि है। कल्लू : वरना मालिक इतना डर क्यो जाता।" 4

इस क्रांतिकारी पोस्टर के कारण मजदूरों मे हिंमत आती है और वे पटेल के अन्याय के विरुद्ध खडे होते है। जिससे पटेल उनके सामने गिडगिडाने लगता है," पटेलः नहीं ले जाऊंगा चैती को३ मेरी जान मत ले कल्लू३ मेरी जान मत ले...चार रुपया रोज चाहिए न...ले...लो...जो चाहे सो ले लो...पर मेरी जान मत लो...मुझे जिंदा रहने दो...मुझे जिंदा रहने द्...मै तुम्हारे पांव पडता हूँ...मुझे जिंदा रहने दो३ 5 वर्तमान समय स्त्री पुरूष समानता का समय है। हिंदी नाटकों में स्त्री को केंद्र में रखकर नाटकों का लेखन किया गया है। 'आधे–अधूरे', 'बिना दीवारों का घर', 'देवयानी का कहना है', 'विशवंष', 'अमली', 'रुदाली', 'चार यारों की यार', 'इला' आदि. कुसुम कुमार का नाटक 'सुनो शेफाली' की नायिका शेफाली एक शिक्षित दलित स्त्री युवा नायिका है। वह जातिभेद नहीं मानती तथा उच्च जाति के बकुल नामक लडके से प्यार करने लगती है। लेकिन बकुल शेफाली से इसलिए शादी करना चाहता है कि, उसके पिताजी चुनाव प्रचार में कह सके कि, हम जातिभेद नहीं करते इसलिए तो बेटे ने दलित लडकी से शादी की। बकुल की यह बात शेफाली को पसंद नहीं आती और वह बकुल का प्रस्ताव ठुकरा देती है तो बकुल शेफाली की छोटी बहन किरण से शादी करता है। बकुल के इस निर्णय से वह अंदर से ठगी महसूस करती है," शेफालीः (विस्फारित आँखों से काँपती हुई) किरन...बहन, तू? ...गले में कुछ फँसकर रह जाने की पीडा महसूस करती हुई वह खडी है।।" 6 इसप्रकार शेफाली व्यवस्था से फँसी हुई युवा पात्र है। असगर वजाहत का प्रसिद्ध नाटक 'गोडसे/गांधी. काँम' की युवा पात्र बावनदास, सुषमा और नवीन अलग–अलग मानसिकता से युक्त युवा पात्र है। बावनदास रेणु के प्रसिद्ध उपन्यास मैला आंचल का बावनदास है। जो गांधी जी को कहता है कि, भारत स्वतंत्र होने पर वही लोग सत्ता में बैठे है जो अंग्रेजों के साथ थे। इसलिए मैने काँग्रेस छोड दी। बावनदास गांधी का अनुयायी है तो नवीन दिल्ली महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक है। सुषमा गांधी के साथ रहना चाहती पर नवीन से बिछडना नहीं चाहती। बावनदास स्पष्ट मानसिकता से युक्त है तो नवीन और सुषमा प्रेम तो करते है पर ना गांधी जी को बता पाते है न त्याग कर पाते है। नाटक के अंत में बाँ के कारण उनकी शादी हो जाती है। वस्तुतः दोनों भी देशसेवा या प्रेम इस दूविधा में थे।

हिंदी नाटकों के स्त्री चित्रण में जो बदलाव आया है वह केवल शिक्षित, शहरी या ऊच्च कुलीन स्त्रियों में ही न होकर इसमें अनपढ़, ग्रामीण या दलित स्त्रियों का भी अंतर्भाव होता है। लक्ष्मीनारायण लाल का नाटक 'गंगामाटी' की गंगा भले ही ग्रामीण हो पर वह संपूर्ण गांव की स्त्रियों में खुद्दारी और जागरूकता लाती है। वह जाती – पाती का भेद न मान कर मानवता को सर्वोच्च स्थान

देती है। निर्भीक एवं स्वतंत्र मानवतावादी विचारों वाली गंगा स्त्री पुरुष समानता में विश्वास रखती है। गांव के सामंतवादी सोच के लोग उसे बदनाम करने का प्रयास करते हैं। लेकिन गंगा हार न मानकर अत्याचार और अंधविश्वास के विरोध में लड़की रहती है। इस लड़ाई में गांव की महिलाएं भी उसके साथ खड़ी हो जाती है। नाटक के अंत में गंगा की लड़ाई को जीत प्राप्त होती है। मृणाल पांडे का नाटक 'मौजूदा हालात को देखते हुए' की बहू भी एक ग्रामीण औरत है वह अपने पति के डरपोक वर्तन का विरोध कर उसमें स्वाभिमान जगाना चाहती है। वह गांव में चल रही गलत परंपराओं का विरोध करती है। वह शिक्षित है तथा घर की खस्ता हालात देखकर अर्थार्जन करना चाहती है। वह पुरुषी मानसिकता के विरोध में घर एवं बाहर एक साथ लडती है। "कितना कुछ कर सकती है यह हम, सिर्फ —— सिर्फ अगर एक बार एक बार औरत को उन खाकों की कैद से उबार पाये जो ब्रह्मचारी, शिकारगाह और मर्दाना कमरों की दीवारों पर उन लोगों ने रचे हैं।"7 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का नाटक 'बकरी' में ग्रामीण विपती अपनी बकरी के लिए अन्याय एवं अत्याचारी राजनेताओं से लडती है। उसका साहस देखकर गांव की सभी औरतें उसका साथ देती है। परिणाम स्वरूप सभी गांव वाले मिलकर अत्याचारी – अन्यायी राजनेताओं का खात्मा करते हैं। इस प्रकार विपती के माध्यम से एक स्त्री गांव की मुक्ति का कारण बनती है। नाग बोडस का नाटक 'नर – नारी' की गुल्लो एक स्वाभिमानी एवं निडर औरत है। उसका पति उसे छोड़कर चला गया तो भी वह डगमगाती नहीं। गांव की पुरुषों द्वारा गंदे इशारो करने पर वह उनका मुंह तोड़ जवाब देती है। गुल्लो का चरित्र इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि, वह अपने पति के वापस आने पर उसे अस्वीकार कर दिलावर के साथ गांव छोड़ चली जाती है। इस संदर्भ में उसका कथन महत्वपूर्ण है, "इससे बोलो, तू तो बिना चूसे ही छोड़ भागा हरामी। इससे कहो गुल्लो को छुआ तो खबरदार। —— गुल्लो अब दिलावर की, दिलावर अब गुल्लो के।"8. उषा गांगुली का नाटक 'रुदाली' की नायिका रुदाली भी एक निम्न वर्गीय स्त्री पात्र होकर नाटक के अद्यांत संघर्षरत है। उसका बेटा मरा, पति मारा तो भी वह डगमगाई नहीं। अंत में उसे रुदाली का काम भी करना पड़ा लेकिन जीवन संघर्ष में जो भी आया वह उसने स्वीकार किया। राजेश जैन का नाटक 'विषवंश' की नायिका रंदा ऐसी ग्रामीण स्त्री है जो अन्याय एवं अत्याचारी राजा का अंत करने के लिए ग्रामीण कन्या से विषकन्या बनती है। अत्याचारी एवं स्त्री लंपट राजा को विषपान कराकर उसका अंत कराती है। इस प्रकार व अन्यायी एवं अत्याचारी राजा का वध कर संपूर्ण प्रजा को भयमुक्त एवं स्वतंत्र कराती है।

निष्कर्षतः

कह सकते है कि, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में सभी प्रकार के युवा पात्रो की मानसिकता का चित्रण दृष्टिगत होता है। इन युवाओं की मानसिकता पर स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियों का प्रभाव दिखाई देता है। इन युवाओं में शिक्षित, अशिक्षित, विवाहित, अविवाहित, कामकाजी, बेरोजगार युवाओं का अंतर्भाव होता है।

संदर्भ सूची

1) ापदकपेउंल.बवउ
2) कोर्ट मार्शल प्लैंप पर से
3) कोर्ट मार्शल पृष्ठ क्र. 31
4) पोस्टर – शंकर शेष पृष्ठ क्र. 36
5) पोस्टर पृष्ठ क्र.61
6) सुनो शेफाली पृष्ठ क्र. 56
7) मौजूदा हालात को देखते हुए – मृणाल पांडे पृष्ठ क्र. 44–45
8) नर – नारी – नाग बोडस पृष्ठ क्र.63